21 Days Winter School on Geospatial Science and Technology concluded at CUH

Central University of Haryana

NAAC Accredited 'A' Grade University

Public Relations Office

Newspaper: Amar Ujala **Date: 26-11-2024**

जियोस्पेशियल साइंस समय की मांग

हकेंवि में हुई विंटर स्कूल ऑन जियोस्पेशियल सांइस एंड टेक्नालॉजी की शुरुआत

संवाद न्यूज एजेंसी

महेंद्रगढ़। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय में सोमवार को भारतीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), नेशनल जियोस्पेशियल प्रोग्राम (एनजीपी) के अंतर्गत से विंटर स्कूल ऑन जियोस्पेशियल साइंस एंड टेक्नोलॉजी की शुरुआत हुई है। इसका शुभारंभ कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने किया।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में शिक्षा मंत्रालय एवं अल्पसंख्यक मामले के मंत्रालय भारत सरकार, नई दिल्ली से जुड़े प्रो. ताहिर हुसैन और मुख्य वक्ता के रूप में सेंटर ऑफ एक्सीलेंस इन डिजास्टर मिटिगेशन एंड मैनेजमेंट, आईआईटी रुड़की के विजिटिंग प्रो. संजय कुमार जैन भी उपस्थित रहे। विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने कहा कि समकालीन समय में जियोस्पेशियल साइंस, जोकि पृथ्वी और उसके जटिल प्रणालियों के अध्ययन से जुड़ा हुआ है, महत्वपूर्ण हो गया है।

कहा कि यह उन्नत विज्ञान शहरी योजना, कृषि, वैश्विक जलवायु परिवर्तन के अध्ययन और अन्य कई क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। उन्होंने कहा कि इसके उपयोग से भूमि का समुचित उपयोग, संसाधन का अनुकूलन और पर्यावरणीय प्रभावों को समझने और उनके बचाव में मदद मिल रही है। आयोजन में सम्मिलित मुख्य अतिथि प्रो. ताहिर हुसैन ने कहा कि आज अधिकांश देशों में जियोस्पेशियल साइंस और तकनीक का उपयोग हो रहा है।

हकेंविमें आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि व अन्य। संवाद

भारत इस क्षेत्र में अग्रणी देश के रूप में नजर आता है। इस तकनीक का उपयोग कृषि, जलवायु परिवर्तन, शहरी विकास और पर्यावरण संरक्षण में लगातार बढ़ रहा है। उन्होंने अपने संबोधन में भारत को एक उदारवादी देश बताते हुए कहा कि देश के विकास में तकनीक का योगदान महत्वपूर्ण है और युवाओं को इसके लिए विशेष रूप से सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ना होगा। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता प्रो. संजय कुमार जैन ने जियोस्पेशियल साइंस एवं तकनीक के महत्व पर प्रकाश डाला।

ग्लेशियरों पर आधारित केस स्टडी का उल्लेख करते हुए जलवायु परिवर्तन और जल संसाधनों के प्रबंधन में इस तकनीक की प्रभावशीलता को प्रदर्शित किया। उन्होंने शहरी योजना, कृषि, और पर्यावरण संरक्षण में भू-स्थानिक तकनीक के बढ़ते उपयोग की बात की और इसे 21 वीं सदी की चुनौतियों के समाधान के लिए आवश्यक बताया। इससे पूर्व में स्कूल ऑफ बेसिक साइंसेस के डीन प्रो. राजेश कुमार गुप्ता ने कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा को बढ़ाते हैं।

प्रो. ताहिर हुसैन और प्रो. संजय कुमार रहे मुख्य वक्ता

भूगोल विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. जितेंद्र कुमार ने कहा कि यह कार्यक्रम ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर का उपयोग करके जियोस्पेशियल तकनीकों में ज्ञान और क्षमता निर्माण का एक प्रमुख पहल है। उन्होंने बताया कि यह प्रोग्राम आत्मनिर्भर भारत, डिजिटल इंडिया और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों के अनुरूप है, जो स्थायी विकास, गुड गवर्नेंस और कार्यबल के विकास में योगदान देता है। विभाग के सहायक आचार्य डॉ. खेराज ने कार्यक्रम का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया। अंत में डॉ.सीएम. मीणा ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। इस अवसर पर डॉ. दिनेश कुमार, डॉ. जितेंद्र कुमार, डॉ. कमराज सिंधु, प्रो. वीरपाल यादव, डॉ. अशोक कुमार शर्मा, डॉ. मोना शर्मा, डॉ. अशोक जांगरा, संजीत कुमार, डॉ. काजल कुमार मंडल और विभाग के शोधार्थी और विद्यार्थी उपस्थित रहे।

Central University of Haryana

NAAC Accredited 'A' Grade University

Public Relations Office

Newspaper: Dainik Bhaskar **Date: 26-11-2024**

देश के विकास में तकनीक का योगदान महत्वपूर्ण

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय में हुई विंटर स्कूल ऑन जियोस्पेशियल सांइस एंड टेक्नोलॉजी की शुरुआत

महेंद्रगढ़| हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंवि) में सोमवार को भारतीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), भारत सरकार के नेशनल जियोस्पेशियल प्रोग्राम (एनजीपी) के अंतर्गत से विंटर स्कूल ऑन जियोस्पेशियल साइंस एंड टेक्नोलॉजी की शुरुआत हुई है।

कार्यक्रम का शुभारंभ कुलपति प्रो.टंकेश्वर कुमार ने किया। मुख्य अतिथि शिक्षा मंत्रालय एवं अल्पसंख्यक मामले के मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली से जुड़े प्रो.ताहिर हुसैन व बतौर मुख्य वक्ता सेंटर ऑफ एक्सीलेंस इन डिजास्टर मिटिगेशन एंड मैनेजमेंट, आईआईटी रुड़की के विजीटिंग प्रो. संजय कुमार जैन मौजूद रहे। कुलपति ने कहा कि समकालीन समय में जियोस्पेशियल साइंस, जोकि पृथ्वी और उसके जटिल प्रणालियों के अध्ययन से जुड़ा हुआ है, अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गया है। मुख्य अतिथि प्रोफेसर ताहिर हुसैन ने कहा कि आज अधिकांश देशों में जियोस्पेशियल साइंस एवं तकनीक का उपयोग हो रहा है और भारत इस क्षेत्र में अग्रणी देश के रूप में नजर आता है। इस तकनीक का उपयोग कृषि, जलवायु परिवर्तन, शहरी विकास और पर्यावरण संरक्षण में लगातार बढ़ रहा है। उन्होंने भारत को एक उदारवादी देश बताते हुए कहा कि देश के विकास में तकनीक का योगदान महत्वपूर्ण है और युवाओं को इसके लिए विशेष रूप से सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ना होगा।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता प्रोफेसर संजय कुमार जैन ने जियोस्पेशियल साइंस एवं तकनीक के महत्व पर प्रकाश डाला। इससे पूर्व में स्कूल ऑफ बेसिक साइंसेस के डीन प्रोफेसर राजेश कुमार गुप्ता ने इस कार्यक्रम के महत्व को रेखांकित किया। भूगोल विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. जितेन्द्र कुमार ने कार्यक्रम का परिचय देते हुए कहा कि यह कार्यक्रम ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर का उपयोग करके जियोस्पेशियल तकनीकों में ज्ञान और क्षमता निर्माण का एक प्रमुख पहल है। डीएसटी समर्थित पहल के तहत, हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय सहित 11 संस्थानों का देश भर में चयन किया गया। इसमें शिक्षकों से लेकर शोधकर्ताओं तक के प्रतिभागी शामिल हैं। इस मौके विभाग के सहायक आचार्य डॉ. खेराज, डॉ.सी.एम. मीणा, डॉ. दिनेश कुमार, डॉ. जितेन्द्र कुमार, डॉ. कमराज सिंधु, प्रो. वीरपाल यादव, डॉ. अशोक कुमार शर्मा आदि उपस्थित रहे।

Central University of Haryana

NAAC Accredited 'A' Grade University

Public Relations Office

Newspaper: Dainik Jagran **Date: 26-11-2024**

विंटर स्कूल आन जियोस्पेशियल सांइस एंड टेक्नालाजी की हुई शुरुआत

संवाद सहयोगी, जागरण ● महेंद्रगढ़: हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंवि) महेंद्रगढ़ में सोमवार को भारतीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), भारत सरकार के नेशनल जियोस्पेशियल प्रोग्राम (एनजीपी) के अंतर्गत से विंटर स्कूल आन जियोस्पेशियल साइंस एंड टेक्नोलॉजी की शुरुआत हुई है। शुभारम्भ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.टंकेश्वर कुमार ने किया। मुख्य अतिथि के रूप में शिक्षा मंत्रालय एवं अल्पसंख्यक मामले के मंत्रालय से जुड़े.प्रो.ताहिर हुसैन रहें। मुख्य वक्ता के रूप में सेंटर ऑफ एक्सीलेंस इन डिजास्टर मिटिगेशन एंड मैनेजमेंट, आईआईटी रुड़की के बिल्डिंग प्रोफेसर संजय कुमार जैन उपस्थित रहें।

प्रो.टंकेश्वर कुमार ने कहा कि समकालीन समय में जियोस्पेशियल साइंस, जोकि पृथ्वी और उसके जटिल प्रणालियों के अध्ययन से जुड़ा हुआ है, अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गया है। यह उन्नत विज्ञान शहरी योजना, कृषि, वैश्विक जलवायु परिवर्तन के अध्ययन और अन्य कई क्षेत्रों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इसके उपयोग से भूमि का समुचित उपयोग, संसाधन का अनुकूलन और पर्यावरणीय प्रभावों को समझने और उनके बचाव में मदद मिल रही है। प्रोफेसर ताहिर हुसैन ने कहा कि अधिकांश देशों में जियोस्पेशियल साइंस एवं तकनीक का उपयोग हो रहा है। भारत इस क्षेत्र में अग्रणी देश के रूप में है। इस तकनीक का उपयोग कृषि, जलवायु परिवर्तन, शहरी विकास और पर्यावरण संरक्षण में लगातार बढ़ रहा है।

विंटर स्कूल आन जियोस्पेशियल सांइस एंड टेक्नालाजी की शुरुआत के अवसर पर मुख्य अतिथि प्रो. ताहिर हुसैन का स्वागत करते कुलपति प्रो.टंकेश्वर कुमार ● सौ. खबरी

प्रोफेसर संजय कुमार जैन ने जियोस्पेशियल साइंस एवं तकनीक के महत्व पर प्रकाश डाला। हिमालयी ग्लेशियरों पर आधारित केस स्टडी का उल्लेख करते हुए, जलवायु परिवर्तन और जल संसाधनों के प्रबंधन में इस तकनीक की प्रभावशीलता को प्रदर्शित किया। शहरी योजना, कृषि, और पर्यावरण संरक्षण में भू-स्थानिक तकनीक के बढ़ते उपयोग की बात करते हुए इसे 21वीं सदी की चुनौतियों के समाधान के लिए अत्यंत आवश्यक बताया। इससे पूर्व में स्कूल ऑफ बेसिक साइंसेस के डीन प्रोफेसर राजेश कुमार गुप्ता ने इस कार्यक्रम के महत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा को बढ़ाते हैं और प्रतिभागियों के कौशल विकास में अहम योगदान देते हैं। इस मौके पर डा. जितेन्द्र कुमार ने कहा कि प्रोग्राम आत्मनिर्भर भारत, डिजिटल इंडिया और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों के अनुरूप है, जो स्थायी विकास, गुड गवर्नेंस और कार्यबल के विकास में योगदान देता है। यहां यह भी महत्वपूर्ण है कि डीएसटी समर्थित पहल के तहत, हकेंवि सहित 11 संस्थानों का देश भर में चयन किया गया। इस मौके पर आचार्य डा. खेराज, डा.सीएम मीणा, डा. दिनेश कुमार, डा. जितेन्द्र कुमार, डा. कमराज सिंधु, प्रोफेसर जैरपाल यादव, डा. अशोक कुमार शर्मा, डा. मोना शर्मा, डा. अशोक जांगरा व अन्य उपस्थित रहे।

हकेंवि के छात्रों ने किया चिल्ला डैम का दौरा

संवाद सहयोगी, जागरण ● महेंद्रगढ़: हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंवि) महेंद्रगढ़ के सिविल इंजीनियरिंग विभाग के विद्यार्थियों ने अपनी अकादमिक पाठ्यक्रम योजना के अंतर्गत उत्तराखंड स्थित चिल्ला डैम का दौरा किया। यह डैम गढ़वाल ऋषिकेश चिल्ला योजना के अंतर्गत आने वाली रन आफ द रिवर परियोजना का महत्वपूर्ण हिस्सा है। परियोजना में सीधे नदी के बहाव से बिजली का उत्पादन किया जाता है। परियोजना 1981 में शुरू हुई थी। चार पावरहाउस के माध्यम से इसकी 144 मेगावाट क्षमता है। प्रत्येक पावरहाउस की क्षमता 36 मेगावाट है। चिल्ला डैम का संचालन उत्तराखंड जल विद्युत निगम लिमिटेड (यूजेवीएनएल) द्वारा किया जाता है।

चिल्ला डैम का दौरा करने पहुंचे हकेंवि के विद्यार्थी व शिक्षक ● सौजन्य: हकेंवि

सिविल इंजीनियरिंग विभाग के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर विकास गर्ग ने बताया कि इस दौरे के माध्यम से विद्यार्थियों को एक जलविद्युत पावर प्लांट के डिजाइन, निर्माण और संचालन की प्रक्रिया का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया गया। विद्यार्थियों को डैम की संरचना, स्पिलवे, टर्बाइनों और पावर जनरेशन यूनिट्स का निरीक्षण करने का अवसर भी मिला। यह आयोजन विश्वविद्यालय की ओर से विद्यार्थियों को प्रदान किए जाने वाले व्यावहारिक ज्ञान से अवगत कराने का एक प्रयास है। प्रोफेसर भास्कर दास, सहायक आचार्य इंजीनियर दिव्या शर्मा, यूजेवीएनएल के जरिष्ट अधिकारी इंजीनियर मनोज व शैलेश मिश्रा ने भी अहम भूमिका निभाई।

Central University of Haryana

NAAC Accredited 'A' Grade University

Public Relations Office

Newspaper: Hello Rewari **Date: 26-11-2024**

हकेवि में हुई विंटर स्कूल ऑन जियोस्पेशियल साइंस एंड टेक्नोलॉजी की शुरुआत

हैलो रेवाड़ी संवाददाता

महेंद्रगढ़। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेवि), महेंद्रगढ़ में सोमवार को भारतीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), भारत सरकार के नेशनल जियोस्पेशियल प्रोग्राम (एनजीपी) के अंतर्गत से विंटर स्कूल ऑन जियोस्पेशियल साइंस एंड टेक्नोलॉजी की शुरुआत हुई है। इस प्रोग्राम का शुभारम्भ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.टंकेश्वर कुमार ने किया और इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में शिक्षा मंत्रालय एवं अल्पसंख्यक मामले के मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली से जुड़े प्रो.ताहिर हुसैन व मुख्य वक्ता के रूप में सेंटर ऑफ एक्सीलेंस इन डिजास्टर मिटिगेशन एंड मैनेजमेंट, आईआईटी रुड़की के विजीटिंग प्रोफेसर संजय कुमार जैन भी उपस्थित रहे।

विश्वविद्यालय कुलपति प्रो.टंकेश्वर कुमार ने अपने संबोधन में कहा कि समकालीन समय में जियोस्पेशियल साइंस, जोकि पृथ्वी और उसके जटिल प्रणालियों के अध्ययन से जुड़ा हुआ है, अत्यधिक महत्वपूर्ण हो गया है। यह उन्नत विज्ञान शहरी योजना, कृषि, वैश्विक जलवायु परिवर्तन के अध्ययन और अन्य कई क्षेत्रों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। कुलपति ने कहा कि इसके उपयोग से भूमि का समुचित उपयोग, संसाधन का अनुकूलन और पर्यावरणीय प्रभावों को समझने और उनके बचाव में मदद मिल रही है। आयोजन में सम्मिलित मुख्य अतिथि प्रोफेसर ताहिर हुसैन ने कहा कि आज अधिकांश देशों में जियोस्पेशियल साइंस एवं तकनीक का उपयोग हो रहा है, और भारत इस क्षेत्र में अग्रणी देश के रूप में नजर आता है। इस तकनीक का उपयोग कृषि, जलवायु परिवर्तन, शहरी विकास और पर्यावरण संरक्षण में लगातार बढ़ रहा है। उन्होंने अपने संबोधन में भारत को एक उदारवादी देश बताते हुए कहा कि देश के विकास में तकनीक का योगदान महत्वपूर्ण है और युवाओं को इसके लिए विशेष रूप से सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ना होगा। प्रोफेसर संजय कुमार जैन ने जियोस्पेशियल साइंस एवं तकनीक के महत्व पर प्रकाश डाला और हिमालयी ग्लेशियरों पर आधारित केस स्टडी का उल्लेख करते हुए जलवायु परिवर्तन और जल संसाधनों के प्रबंधन में इस तकनीक की प्रभावशीलता को प्रदर्शित किया। उन्होंने शहरी योजना, कृषि, और पर्यावरण संरक्षण में भू-स्थानिक तकनीक के बढ़ते उपयोग की बात की और इसे 21वीं सदी की चुनौतियों के समाधान के लिए अत्यंत आवश्यक बताया। इससे पूर्व में स्कूल ऑफ बेसिक साइंसेस के डीन प्रोफेसर राजेश कुमार गुप्ता ने इस कार्यक्रम के महत्व को रेखांकित किया और कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रम विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा को बढ़ाते हैं और प्रतिभागियों के कौशल विकास में अहम योगदान देते हैं। इस अवसर पर डॉ. दिनेश कुमार, डॉ. जितेन्द्र कुमार, डॉ. कमराज सिंधु, प्रोफेसर वीरपाल यादव, डॉ. अशोक कुमार शर्मा, डॉ. मोना शर्मा, डॉ. अशोक जांगरा, श्री संजीत कुमार, डॉ. काजल कुमार मंडल और विभाग के शोधार्थी और विद्यार्थी उपस्थित रहे।

Central University of Haryana

NAAC Accredited 'A' Grade University

Public Relations Office

Newspaper: India News Calling **Date: 26-11-2024**

Winter School on Geospatial Science and Technology started in CUH

MAHENDERGARH, 25.11.24- The Central University of Haryana (CUH) Mahendergarh, in collaboration with the National Geospatial Program (NGP) of the Department of Science and Technology (DST), Government of India, has started a Winter School on Geospatial Science and Technology from 25 November2024. This program was inaugurated by the Honourable Vice Chancellor Prof. Tankeshwar Kumar, Central University of Haryana in which the chief guest was Professor Tahir Hussain, Ministry of Education and Ministry of Minority Affairs, Govt. of India, New Delhi and the keynote speaker was Professor Sanjay Kumar Jain, Visiting Professor, Centre of Excellence in Disaster Mitigation and Management, IIT Roorkee.

Prof. Tankeshwar Kumar emphasized that in the contemporary era, geospatial science, which is dedicated to the comprehensive study of the Earth and its complex systems, has become increasingly significant. This advanced field of science has been playing a pivotal role in addressing a wide range of challenges and opportunities. Its applications are expanding rapidly across numerous domains, including but not limited to urban planning, where it facilitates efficient land use and sustainable development; agriculture, where it supports precision farming and resource optimization; global climate change studies, where it provides critical data for understanding and mitigating environmental impacts; and various other areas of research.

Chief Guest Professor Tahir Hussain emphasized that if we talk about the whole world, today most of the countries are using geospatial technology and its use is increasing day by day and India is leading in this. In all these fields, geospatial science has consistently proven to be a powerful and indispensable tool, driving innovation and fostering a deeper understanding of our planet.

Professor Sanjay Kumar Jain highlighted the growing importance of geospatial technology, emphasizing its expanding role in addressing global challenges and fostering sustainable development. Using case studies on Himalayan glaciers, he demonstrated its efficiency in monitoring climate change indicators and managing water resources. He also outlined its broader applications in urban planning, agriculture, and environmental conservation, underscoring its critical role in scientific research and tackling 21st-century challenges.

Dean Professor Rajesh Kumar Gupta emphasized the significance of such programs, highlighting their role in enhancing the university's reputation and contributing to capacity building. Dr. Jitendra Kumar, Head, Department of Geography welcome the dignitaries and introduce the program. He stated that it is a key initiative to build knowledge and capacity in geospatial technologies using open-source software. With a curriculum covering GIS, remote sensing, and digital image processing, it combines lectures, labs, fieldwork, and a mini-project for practical learning. Aligned with the 'Aatam Nirbhar Bharat,' 'Digital India,' and NEP 2020 goals, the Winter School contributes to sustainable development, good governance, and workforce development in geospatial science. It features three training levels, with the current session focusing on Level 1: Standard Program.

As part of a DST-supported initiative, 11 institutions, including the Central University of Haryana, were selected nationwide. Participants, ranging from educators to researchers, represent a wide geographical spread across India from Jammu and Kashmir, Himachal Pradesh, Uttarakhand, Uttar Pradesh, Rajasthan, and Haryana. He also thanked Department of Science and Technology for funding the programme. Dr. Kheraj anchored the programme and present the brief overview of the program and Dr. C.M. Meena presented vote of thanks. On this occasion Dr. Dinesh Kumar, Dr. Jitendra Kumar, Dr. Kamraj Sindhu, Professor Veer Pal Yadav, Dr. Ashok Kumar Sharma, Dr. Mona Sharma, Dr. Ashok Jangra Mr. Sanjit Kumar, Dr. Kajal Kumar Mandal and scholars and students of the department were present during this occasion.

Central University of Haryana

NAAC Accredited 'A' Grade University

Public Relations Office

Newspaper: Aaj Samaj **Date: 17-12-2024**

हकेवि में विंटर स्कूल ऑन जियोस्पेशियल सांइस एंड टेक्नोलॉजी प्रोग्राम का हुआ समापन

नीरज कौशिक

महेंद्रगढ़। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेवि), महेंद्रगढ़ के भूगोल विभाग द्वारा नेशनल गियोस्पेशल प्रोग्राम (एनजीपी) के सहयोग से आयोजित विंटर स्कूल ऑन जियोस्पेशियल सांइस एंड टेक्नोलॉजी प्रोग्राम का समापन हो गया। विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), भारत सरकार द्वारा प्रायोजित इस प्रोग्राम का उद्घाटन विश्वविद्यालय कुलपति द्वारा किया गया। कुलपति ने अपने संबोधन में इस तरह के कार्यक्रमों के महत्त्व से अवगत कराया। उन्होंने कृषि, शहरी नियोजन, जलवायु परिवर्तन की निगरानी और सुशासन में पारदर्शिता लाने में प्रौद्योगिकी की बदलती संभावनाओं को उपयोगी बताया। आयोजन के समापन समारोह विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली की राष्ट्रीय भू-स्थानिक कार्यक्रम समन्वयक, डॉ. शुभा पांडे मुख्य अतिथि के रूप उपस्थित रहीं। डॉ. शुभा पांडे ने ट्रेनिंग प्रोग्राम की प्रासंगिकता पर जोर देते हुए कहा कि यह प्रोग्राम जियोस्पेशियल तकनीकों को बढ़ावा देने के लिए विभाग के प्रयासों के अनुरूप है। उन्होंने इस क्षेत्र में ज्ञान और कौशल विकसित करने के महत्व को रेखांकित किया। डॉ. पांडे ने जियोस्पेशियल तकनीकों के विभिन्न अनुप्रयोगों पर प्रकाश डाला। उन्होंने प्रतिभागियों को प्रशिक्षण के दौरान अर्जित ज्ञान और संसाधनों का सक्रिय रूप से उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया। डॉ. जितेंद्र कुमार ने कहा कि आईआईटी रुड़की से प्रो. संजय कुमार जैन और प्रो. आर.डी. गर्ग; हरियाणा स्पेस एप्लिकेशंस सेंटर से डॉ. सुल्तान सिंह; महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय से प्रो. नीना सिंह और प्रो. प्रमोद कुमार; जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली से प्रो. अतीकुर रहमान; जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय से प्रो. पी.के. जोशी; जियोसॉल्यूशन्स, गुरुग्राम के निदेशक श्री खुशपाल दहिया; आईजीयू मीरपुर से डॉ. विपिन कुमार; सीबीएलयू, भिवानी से डॉ. पवन कुमार; हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय से प्रो. पवन कुमार शर्मा और प्रो. भास्कर दास तथा भूगोल विभाग के संकाय सदस्यों ने आयोजन में विशेषज्ञों के रूप में प्रतिभागिता की। समापन सत्र अनिल कुमार, सुनीता बेनीवाल, डॉ. निकेश शर्मा, डॉ. सुमन कुमारी, डॉ. पंकज कुमार सोनी, और डॉ. धीरेंद्र कुमार ने कार्यक्रम और विश्वविद्यालय के सांस्कृतिक पक्षों पर अपने विचार साझा किए। हकेवि में स्कूल ऑफ बेसिक साइंसेज के डीन प्रो. राजेश कुमार गुप्ता ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया। कार्यक्रम समन्वयक और भूगाले विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. जितेंद्र कुमार ने कार्यक्रम की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने इस कार्यक्रम को आत्मनिर्भर भारत, डिजिटल इंडिया और नई शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों के अनुरूप बताया। उन्होंने बताया कि आयोजन में 25 शिक्षक और शोधकर्ता जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और हरियाणा से शामिल हुए। डॉ. जितेंद्र कुमार ने विशेषज्ञों, आयोजकों, विद्यार्थियों और शोधार्थियों का सक्रिय भागीदारी के लिए धन्यवाद व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन वंदना डांगी ने किया। कार्यक्रम के अंत में संजीत कुमार ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। इस अवसर अंकुर मेहता, डॉ. दिनेश कुमार, डॉ. जितेंद्र कुमार, डॉ. रवि प्रताप पांडेय, डॉ. सी.एम. मीणा सहित विद्यार्थी एवं शोधार्थी उपस्थित रहे।

विंटर स्कूल ऑन जियोस्पेशियल सांइस एंड टेक्नोलॉजी प्रोग्राम के समापन सत्र में उपस्थित विशेषज्ञ एवं प्रतिभागी।

Central University of Haryana

NAAC Accredited 'A' Grade University

Public Relations Office

Newspaper: Amar Ujala **Date: 17-12-2024**

प्रौद्योगिकी की बदलती संभावनाएं उपयोगी

हकेंवि में हुआ विंटर स्कूल ऑन जियोस्पेशियल सांइस एंड टेक्नोलॉजी कार्यक्रम

संवाद न्यूज एजेंसी

महेंद्रगढ़। हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंवि) के भूगोल विभाग द्वारा आयोजित विंटर स्कूल ऑन जियोस्पेशियल सांइस एंड टेक्नालॉजी कार्यक्रम का समापन हो गया।

विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. टंकेश्वर ने कृषि, शहरी नियोजन, जलवायु परिवर्तन की निगरानी और सुशासन में पारदर्शिता लाने में प्रौद्योगिकी की बदलती संभावनाओं को उपयोगी बताया।

विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली की राष्ट्रीय भू-स्थानिक कार्यक्रम समन्वयक, डॉ. शुभा पांडे मुख्य अतिथि के रूप उपस्थित रहीं। डॉ. शुभा पांडे ने कहा कि यह कार्यक्रम जियोस्पेशियल तकनीकों को बढ़ावा देने के लिए किया गया है। उन्होंने ज्ञान और कौशल विकसित करने के महत्व को रेखांकित किया।

डॉ. जितेंद्र कुमार ने बताया कि आईआईटी रुड़की से प्रो. संजय कुमार जैन, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय से प्रो. नीना सिंह और प्रो. प्रमोद कुमार, आईजीयू मीरपुर से डॉ. विपिन कुमार, सीबीएलयू, भिवानी से डॉ. पवन कुमार, हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय से प्रो. पवन कुमार शर्मा और प्रो. भास्कर दास तथा भूगोल विभाग के संकाय सदस्यों ने विशेषज्ञों के रूप में प्रतिभागिता की। कार्यक्रम का संचालन वंदना डांगी ने किया।

कार्यक्रम के अंत में संजीत कुमार ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। इस अवसर अंकुर मेहता, डॉ. दिनेश कुमार, डॉ. जितेंद्र कुमार, डॉ. रवि प्रताप पांडेय, डॉ. सी.एम. मीणा सहित विद्यार्थी एवं शोधार्थी उपस्थित रहे।

विंटर स्कूल ऑन जियोस्पेशियल सांइस एंड टेक्नोलॉजी प्रोग्राम के समापन सत्र में उपस्थित विशेषज्ञ एवं प्रतिभागी। स्रोत : हकेंवि

Central University of Haryana

NAAC Accredited 'A' Grade University

Public Relations Office

Newspaper: Dainik Jagran **Date: 17-12-2024**

पारदर्शिता लाने में प्रौद्योगिकी की बदलती संभावनाएं महत्वपूर्ण

संवाद सहयोगी, जागरण ● महेंद्रगढ़ : हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंवि), महेंद्रगढ़ के भूगोल विभाग द्वारा नेशनल गियोस्पेशल प्रोग्राम (एनजीपी) के सहयोग से आयोजित विंटर स्कूल आन जियोस्पेशियल सांइस एंड टेक्नोलाजी प्रोग्राम का समापन हो गया। विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), भारत सरकार द्वारा प्रायोजित इस प्रोग्राम का उद्घाटन विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार ने किया। कुलपति ने कृषि, शहरी नियोजन, जलवायु परिवर्तन की निगरानी और सुशासन में पारदर्शिता लाने में प्रौद्योगिकी की बदलती संभावनाओं को उपयोगी बताया। आयोजन के समापन समारोह में राष्ट्रीय भू-स्थानिक कार्यक्रम समन्वयक डा. शुभा पांडे मुख्य अतिथि के रूप उपस्थित रहीं।

डा. शुभा पांडे ने ट्रेनिंग प्रोग्राम की प्रासंगिकता पर जोर देते हुए कहा कि यह प्रोग्राम जियोस्पेशियल तकनीकों को बढ़ावा देने के लिए विभाग के प्रयासों के अनुरूप है। उन्होंने इस क्षेत्र में ज्ञान और कौशल विकसित करने के महत्व को रेखांकित किया। डा. पांडे ने जियोस्पेशियल तकनीकों के विभिन्न अनुप्रयोगों पर प्रकाश डाला। उन्होंने प्रतिभागियों को प्रशिक्षण के दौरान अर्जित ज्ञान और संसाधनों का सक्रिय रूप से उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया। डा. जितेंद्र कुमार ने कहा कि आइआइटी रुड़की से प्रो. संजय कुमार जैन और प्रो. आरडी गर्ग, हरियाणा स्पेस एप्लिकेशंस सेंटर से डा. सुल्तान सिंह, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय से प्रो. नीना सिंह और प्रो. प्रमोद कुमार, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली से प्रो. अतीकुर रहमान, जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय से प्रो. पी.के. जोशी, जियोसाल्यूशन्स, गुरुग्राम के निदेशक खुशपाल दहिया, आइजीयू मीरपुर से डा. विपिन कुमार, सीबीएलयू, भिवानी से डा. पवन कुमार, हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय से प्रो. पवन कुमार शर्मा और प्रो. भास्कर दास तथा भूगोल विभाग के संकाय सदस्यों ने आयोजन में विशेषज्ञों के रूप में प्रतिभागिता की। समापन सत्र अनिल कुमार, सुनीता बेनीवाल, डा. निकेश शर्मा, डा. सुमन कुमारी, डा. पंकज कुमार सोनी और डा. धीरेंद्र कुमार ने कार्यक्रम और विश्वविद्यालय के सांस्कृतिक पक्षों पर अपने विचार साझा किए।

हकेंवि में स्कूल आफ बेसिक साइंसेज के डीन प्रो. राजेश कुमार गुप्ता ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया। कार्यक्रम समन्वयक और भूगोल विभाग के विभागाध्यक्ष डा. जितेंद्र कुमार ने कार्यक्रम की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने बताया कि आयोजन में 25 शिक्षक और शोधकर्ता जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और हरियाणा से शामिल हुए। डा. जितेंद्र कुमार ने विशेषज्ञों, आयोजकों, विद्यार्थियों और शोधार्थियों की सक्रिय भागीदारी के लिए धन्यवाद व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन वंदना डांगी ने किया। कार्यक्रम के अंत में संजीत कुमार ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया। इस अवसर अंकुर मेहता, डा. दिनेश कुमार, डा. जितेंद्र कुमार, डा. रवि प्रताप पांडेय,डा. सी.एम. मीणा सहित विद्यार्थी एवं शोधार्थी उपस्थित रहे।

विंटर स्कूल आन जियोस्पेशियल सांइस एंड टेक्नोलॉजी प्रोग्राम के समापन सत्र में उपस्थित विशेषज्ञ एवं प्रतिभागी ● सौजन्य: हकेंवि

प्रो. रुपेश देशमुख को हुए भार्गव स्मृति पुरस्कार 2024 से सम्मानित

संवाद सहयोगी, जागरण ● महेंद्रगढ़ : पौधों में सिलिकान की भूमिका पर शोध निष्कर्षों के लिए हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेंवि), महेंद्रगढ़ के प्रोफेसर रुपेश देशमुख को प्रोफेसर के. एस. भार्गव स्मृति पुरस्कार 2024 से सम्मानित किया गया है। यह वार्षिक पुरस्कार पौध विज्ञान, पौध रोग विज्ञान, सूक्ष्म जीव विज्ञान, जलीय कवक या पौध मायकोलाजी में उत्कृष्ट योगदान देने वाले वैज्ञानिकों और शिक्षाविदों को प्रदान किया जाता है।

प्रो. देशमुख ने विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार को अपनी सफलता का श्रेय देते हुए कहा कि विश्वविद्यालय कुलपति के दूरदर्शी नेतृत्व और निरंतर समर्थन ने विश्वविद्यालय में शोध-प्रेरित वातावरण को प्रोत्साहित किया है। जिससे संकाय सदस्यों को अपने-अपने क्षेत्रों में उत्कृष्टता प्राप्त करने में मदद मिली है।

उन्होंने नवाचार की संस्कृति को बढ़ावा देने, संसाधन और मेंटरशिप प्रदान करने, और संकाय को उच्च-प्रभाव वाले अध्ययन करने के लिए प्रोत्साहित किया है। इस तरह का नेतृत्व विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंच पर बढ़ती मान्यता में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

अवार्ड मिलने के बाद प्रो. रूपेश देशमुख कुलपति प्रो. टंकेश्वर के साथ ● सौ. हकेंवि

प्रो. देशमुख को यह सम्मान पौध जैव प्रौद्योगिकी में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए प्रदान किया गया है। उनका अग्रणी शोध कई प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित हुआ है, जो पौध विज्ञान में उनके योगदान को दर्शाता है।

हालही में क्लेरिवेट द्वारा 2024 के लिए श्रेष्ठ 01 प्रतिशत अत्यधिक उद्धत शोधकर्ताओं की सूची में शामिल किया गया है, जो वैश्विक अनुसंधान के क्षेत्र में उनकी असाधारण उपस्थिति को दर्शाता है। उल्लेखनीय है कि प्रो. देशमुख केवल छह भारतीय वैज्ञानिकों में से एक हैं, जिन्हें यह सम्मान मिला है।

Central University of Haryana

NAAC Accredited 'A' Grade University

Public Relations Office

Newspaper: Dainik Tribune **Date: 17-12-2024**

विंटर स्कूल ऑन जियोस्पेशल साईंस एंड टेक्नोलॉजी प्रोग्राम का समापन

नारनौल,16 दिसंबर (निस)

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय, महेंद्रगढ़ के भूगोल विभाग द्वारा नेशनल जियोस्पेशल प्रोग्राम (एनजीपी) के सहयोग से आयोजित विंटर स्कूल ऑन जियोस्पेशियल सांइस एंड टेक्नोलॉजी प्रोग्राम का समापन हो गया। विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), भारत सरकार द्वारा प्रायोजित इस प्रोग्राम का उद्घाटन विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार द्वारा किया गया। कुलपति ने अपने संबोधन में इस तरह के कार्यक्रमों के महत्त्व से अवगत कराया। उन्होंने कृषि, शहरी नियोजन, जलवायु परिवर्तन की निगरानी और सुशासन में पारदर्शिता लाने में प्रौद्योगिकी की बदलती संभावनाओं को उपयोगी बताया। आयोजन के समापन समारोह विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, नयी दिल्ली की राष्ट्रीय भू-स्थानिक कार्यक्रम समन्वयक, डॉ. शुभा पांडे मुख्य अतिथि के रूप उपस्थित रहीं।

हकेंवि महेंद्रगढ़ में विंटर स्कूल ऑन जियोस्पेशल साईंस एंड टेक्नोलॉजी प्रोग्राम के समापन सत्र में उपस्थित विशेषज्ञ एवं प्रतिभागी।-निस

डॉ. शुभा पांडे ने ट्रेनिंग प्रोग्राम की प्रासंगिकता पर जोर देते हुए कहा कि यह प्रोग्राम जियोस्पेशियल तकनीकों को बढ़ावा देने के लिए विभाग के प्रयासों के अनुरूप है। उन्होंने इस क्षेत्र में ज्ञान और कौशल विकसित करने के महत्व को रेखांकित किया। डॉ. पांडे ने जियोस्पेशिल तकनीकों के विभिन्न अनुप्रयोगों पर प्रकाश डाला। उन्होंने प्रतिभागियों को प्रशिक्षण के दौरान अर्जित ज्ञान और संसाधनों का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया। डॉ. जितेंद्र कुमार ने कहा कि आईआईटी रुड़की से प्रो. संजय कुमार जैन और प्रो. आरडी गर्ग, हरियाणा स्पेस एप्लिकेशंस सेंटर से डॉ. सुल्तान सिंह और डॉ. धीरेंद्र कुमार ने अपने विचार साझा किए।

Central University of Haryana

NAAC Accredited 'A' Grade University

Public Relations Office

Newspaper: Haribhoomi **Date: 17-12-2024**

प्रौद्योगिकी की बदलती संभावनाएं उपयोगी : वीसी

■ हकेंवि में विंटर स्कूल आन जियोस्पेशियल सांइस एंड टेक्नोलॉजी प्रोग्राम संपन्न

हरिभूमि न्यूज ⏭ महेंद्रगढ़

हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय के भूगोल विभाग द्वारा नेशनल गियोस्पेशल प्रोग्राम (एनजीपी) के सहयोग से आयोजित विंटर स्कूल आन जियोस्पेशियल सांइस एंड टेक्नोलॉजी प्रोग्राम का समापन हो गया। विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी) भारत सरकार द्वारा प्रायोजित इस प्रोग्राम का उद्घाटन विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार द्वारा किया गया। कुलपति ने अपने संबोधन में इस तरह के कार्यक्रम के महत्व से अवगत कराया। उन्होंने कृषि, शहरी नियोजन, जलवायु परिवर्तन की निगरानी और सुशासन में पारदर्शिता लाने में प्रौद्योगिकी की बदलती संभावनाओं को उपयोगी बताया। आयोजन के समापन समारोह विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग नई दिल्ली की राष्ट्रीय भू-स्थानिक कार्यक्रम समंवयक, डॉ. शुभा पांडे मुख्यातिथि के रूप उपस्थित रही। डॉ. शुभा पांडे ने कहा कि यह प्रोग्राम जियोस्पेशियल तकनीकों को बढ़ावा देने के लिए विभाग के प्रयासों के अनुरूप है। उन्होंने इस क्षेत्र में ज्ञान और कौशल विकसित करने के महत्व को रेखांकित किया। डॉ. पांडे ने जियोस्पेशियल तकनीकों के विभिन्न अनुप्रयोगों पर प्रकाश डाला। उन्होंने प्रतिभागियों को प्रशिक्षण के दौरान अर्जित ज्ञान और संसाधनों का सक्रिय रूप से उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया।

महेंद्रगढ़। विंटर स्कूल आन जियोस्पेशियल सांइस एंड टेक्नोलॉजी प्रोग्राम के समापन सत्र में उपस्थित विशेषज्ञ एवं प्रतिभागी। *फोटो: हरिभूमि*

इन्होंने विचार साझा किए

समापन सत्र अनिल कुमार, सुनीता बेनीवाल, डॉ. निकेश शर्मा, डॉ. सुमन कुमारी, डॉ. पंकज कुमार सोनी और डॉ. धीरेंद्र कुमार ने कार्यक्रम और विश्वविद्यालय के सांस्कृतिक पक्षों पर अपने विचार साझा किए। हकेंवि में स्कूल आफ बेसिक साइंसेज के डीन प्रो. राजेश कुमार गुप्ता ने मुख्यातिथि का स्वागत किया। कार्यक्रम समन्वयक और भूगाले विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. जितेंद्र कुमार ने कार्यक्रम की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की।

Central University of Haryana

NAAC Accredited 'A' Grade University

Public Relations Office

Newspaper: Navoday Times **Date: 17-12-2024**

विंटर स्कूल ऑन जियोस्पेशियल सांइस एंड टेक्नोलॉजी प्रोग्राम का हुआ समापन

महेंद्रगढ़, 15 दिसम्बर (मोहन/परमजीत): हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय (हकेवि), महेंद्रगढ़ के भूगोल विभाग द्वारा नेशनल गियोस्पेशल प्रोग्राम (एनजीपी) के सहयोग से आयोजित विंटर स्कूल ऑन जियोस्पेशियल सांइस एंड टेक्नोलॉजी प्रोग्राम का समापन हो गया। विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग (डीएसटी), भारत सरकार द्वारा प्रायोजित इस प्रोग्राम का उद्घाटन विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार द्वाराकिया गया।

कुलपति ने अपने संबोधन में इस तरह के कार्यक्रमों के महत्त्व से अवगत कराया। उन्होंने कृषि, शहरी नियोजन, जलवायु परिवर्तन की निगरानी और सुशासन में पारदर्शिता लाने में प्रौद्योगिकी की बदलती संभावनाओं को उपयोगी बताया। आयोजन के समापन समारोह विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, नई दिल्ली की राष्ट्रीय भू-स्थानिक कार्यक्रम समन्वयक, डॉ. शुभा पांडे मुख्य अतिथि के रूप उपस्थित रहीं।

डॉ. शुभा पांडे ने ट्रेनिंग प्रोग्राम की प्रासंगिकता पर जोर देते हुए कहा कि यह प्रोग्राम जियोस्पेशियल तकनीकों को बढ़ावा देने के लिए विभाग के प्रयासों के अनुरूप है। उन्होंने इस क्षेत्र में ज्ञान और कौशल विकसित करने के महत्व को रेखांकित किया। डॉ. पांडे ने जियोस्पेशियल तकनीकों के विभिन्न अनुप्रयोगों पर प्रकाश डाला।

उन्होंने प्रतिभागियों को प्रशिक्षण के दौरान अर्जित ज्ञान और संसाधनों का सक्रिय रूप से उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया। डॉ. जितेंद्र कुमार ने कहा कि आईआईटी रुड़की से प्रो. संजय कुमार जैन और प्रो. आर. डी. गर्ग; हरियाणा स्पेस एप्लिकेशंस सेंटर से डॉ. सुल्तान सिंह; महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय से प्रो. नीना सिंह और प्रो. प्रमोद कुमार; जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली से प्रो. अतीकुर रहमान; जवाहर लाल नेहरु विश्वविद्यालय से प्रो. पी.के. जोशी; जियोसॉल्यूशन्स, गुरुग्राम के निदेशक श्री खुशपाल दहिया; आईजीयू मीरपुर से डॉ. विपिन कुमार; सीबीएलयू, भिवानी से डॉ. पवन कुमार; हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय से प्रो. पवन कुमार शर्मा और प्रो. भास्कर दास तथा भूगोल विभाग के संकाय सदस्यों ने आयोजन में विशेषज्ञों के रूप में प्रतिभागिता की। समापन सत्र अनिल कुमार, सुनीता बेनीवाल, डॉ. निकेश शर्मा, डॉ. सुमन कुमारी, डॉ. पंकज कुमार सोनी, और डॉ. धीरेंद्र कुमार ने कार्यक्रम और विश्वविद्यालय के सांस्कृतिक पक्षों पर अपने विचार साझा किए। स्कूल ऑफ बेसिक साइंसेज के डीन प्रो. राजेश कुमार गुप्ता ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया। कार्यक्रम समन्वयक और भूगाले विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. जितेंद्र कुमार ने कार्यक्रम की विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत की। उन्होंने इस कार्यक्रम को आत्मनिर्भर भारत, डिजिटल इंडिया और नई शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों के अनुरूप बताया। उन्होंने बताया कि आयोजन में 25 शिक्षक और शोधकर्ता जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और हरियाणा से शामिल हुए। डॉ. जितेंद्र कुमार ने विशेषज्ञों, आयोजकों, विद्यार्थियों और शोधार्थियों का सक्रिय भागीदारी के लिए धन्यवाद व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन वंदना डांगी ने किया। कार्यक्रम के अंत में संजीत कुमार ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।